छायावाद की प्रवृत्तियाँ

13-04-2020

डॉ० अनिरुद्ध सिंह
हिन्दी विभाग

हिन्दी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष
स्नातक
'हिन्दी साहित्य का इतिहास'

1- वैयक्तिकता -

छायावाद की पहली प्रवृत्ति है 'वैयक्तिकता'। कुछ लोगों ने इसे व्यक्तिवाद कहा है। दरअसल स्वतंत्रता का पहला प्रतीक है व्यक्ति। स्वाधीनता की अनुभूति सबसे पहले व्यक्ति के स्तर पर घटित होती है। छायावाद को व्यक्तिनिष्ठ काव्य कहा गया है। और ऐसा कह कर उसकी सीमाएं तय की गई है। छायावाद का व्यक्ति जिस नये मूल्य का प्रतीक है वह मध्ययुगीन सामंती रूढ़ियों से मुक्त होकर अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास का प्रयास था। इसलिए छायावाद इस वैयक्तिक चेतना के कारण विद्रोह का काव्य है और उसमें व्यक्ति अपने रूढ़िगत समाज और समय से मुक्ति चाहता है। शीर्षक है 'मधुप गुनगुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी'। इस कविता में कुछ ऐसे प्रसंगों का जिक्र प्रसाद ने किया है, जो निजी हैं, बहुत वैयक्तिक हैं। उसमें दो अंश हैं:

Scanned with CamScanner

'मिला कहां वह सुख जिसका मैं स्वप्न देख कर
जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुस्का कर जो भाग गया।
उज्जवल गाथा कैसे गाऊँ उन मधुर चांदनी रातों की
अरे खिलखिला कर होने वाली उन बातों की।'

एक बहुत सघन निजी प्रेम प्रसंग है। चांदनी रात है, हंसी की खिलखिलाहटें हैं, अधूरा और अतृप्त हवा में टंगा हुआ एक आलिंगन है। ये बहुत निजी प्रसंग है जिनका जिक्र कविता में हो रहा है।

2- <u>प्रकृति-</u>

छायावाद में प्रकृति व्यक्ति की स्वाधीन आकांक्षा के प्रतीक के रूप में आई। इस प्रकृति के माध्यम से छायावाद के रचनाकार ने संसार के साथ एक नया परिचय स्थापित किया-

'खुले पलक फैली सुवर्ण छवि
जगी सुरभि डोले मधुबाल,
स्पंदन, कंपन औ नवजीवन सीखा जग ने अपनाना।

जगत ने प्रकृति से जो सीखा उसमें स्पंदन था, कंपन था, नवजीवन था, सुगंध थी, हवाएं थी, और एक सुनहला प्रकाश था जो धरती आकाश और आंखों की सरहदों तक छाया हुआ था। इस तरह से छायावादी कवियों ने प्रकृति के साथ एक गहन रागात्मक संबंध जोड़ा। प्रकृति मात्र भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं

Scanned with CamScanner

थी बल्कि छायावादी कवियों ने उसके साथ एक संबंध स्थापित किया। इसलिये प्रकृति के कई रूप दिखाई देते हैं। छायावादी में कहीं वह सहचरी है, कहीं सखी है, कहीं प्रेयसी है, कहीं माँ है। अनेक मानवीय संबंधों में प्रकृति को ग्रहण करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

'संध्या सुंदरी' निराला की बहुत प्रसिद्ध कविता है-

'मेघमय आसमान से उतर रही है,
संध्या सुन्दरी परी सी धीरे-धीरे।'---

बादलों से भरे हुए आसमान से सांझ की परी उतर रही है, धीरे-धीरे। और उसके पैरों में पायल है, आंखों में काजल है, बाल खुले हुए हैं, सुन्दर है चेहरे पर चांद की चमक है।

छायावाद में प्रकृति के दोनो रूपों का चित्रण प्रधानता से दिखायी देता है। एक प्रकृति का वह है जो फूल की हंसी के रूप में और झरनों के गीत के रूप में सुनाई देती है अपने को अभिव्यक्त करती है। दूसरी प्रकृति विराटता वाली भी है। ये दोनों ही प्रकृति के रूप हो सकते हैं।

Scanned with CamScanner

3- नारी-

छायावाद में नारी की प्रधानता इतनी है कि बहुत दिनों तक छायावाद को स्त्रैण काव्य के रूप में जाना जाता रहा। यानी इसमें पुरुष भाव की तुलना में स्त्री भाव, स्त्री-मानसिकता, स्त्री-संवेदना की प्रधानता है। लेकिन छायावाद की पृष्ठभूमि में उपस्थित द्विवेदी युग का निषेध, अनुशासन, अनुशासन का आतंक, चूंकि संस्कार के रूप में मौजूद है इसलिए छायावाद के आरंभिक चरण में स्त्री के साथ संबंध में एक संकोच भाव दिखाई देता है। छायावाद के बारे में यह ध्यान देने वाली बात है कि छायावाद एक विकसनशील काव्य है, वह परिस्थितियों के हिसाब से संस्कारों के हिसाब से परिवर्तित होता हुआ चलता है। इसलिए आरंभिक छायावाद में और अंतिम चरण के छायावाद में बहुत फर्क दिखाई पड़ेगा। तो द्विवेदी के आतंक और निषेध के संस्कार से ग्रस्त होने के कारण आरंभ में स्त्री के प्रति एक संकोच का भाव दिखाई देता है। और इस संकोच के कारण छायावादी रचनाकार स्त्री की तुलना में प्रकृति के साथ संबंध जोड़ने को अधिक श्रेयस्कर मानता है।

पंत की चर्चित कविता है - 'छोड़ द्रुमों की मृदु

छाया तोड़ प्रकृति से भी माया। बाले तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन।'

छायावाद' की स्त्री मानसिक स्त्री है, उस स्त्री का संबंध सामाजिक व्यवस्था की इकाई से नहीं है। छायावादी रचनाकार स्त्री को सामाजिक संबंधों में नहीं बल्कि इसे कल्पना और भावना के आइने में चित्रित करता है। उस स्त्री में एक अमूर्तन है। इसी दौर में प्रेमचन्द लिख रहे थे, प्रेमचन्द की स्त्री वह स्त्री थी जो सामाजिक व्यवस्था और उसके बंधनों में जकड़ी हुई थी. सभी प्रकार के आर्थिक और सामाजिक अधिकारों से वंचित. पुरुष पर पूरी तरह आश्रित और पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में तिल-तिल मरने के लिए अभिशप्त। प्रेमचन्द के युग में ही छायावादी भी लिख रहे हैं लेकिन छायावाद में स्त्री के पास कोई समस्या नहीं है. क्योंकि वह स्त्री समाज से नहीं उठाई गई है, बल्कि दिमाग की कल्पना से निर्मित की गयी है।

दूसरी बात कि स्त्री के प्रति छायावादियों का दृष्टिकोण मध्यकालीन या सामंतवादी संस्कारों से प्रभावित है। इसलिए एक तरफ वह स्त्री को पवित्रता का, श्रद्धा का, जीवन का प्रतिमान मानता है तो दूसरी तरफ इस बात पर भी बल देता है कि स्त्री की सार्थकता पुरुष के लिए समर्पित हो जाने में है।

Scanned with CamScanner

सामंतवादी दृष्टि का विरोधाभास यह है कि वह एक तरफ स्त्री को देवी के रूप में पूजता है और दूसरे स्थान पर वह स्त्री को सभी प्रकार के अधिकारों से वंचित रखना चाहता है।

इस दृष्टि से सामंती जीवन की जो विरोधाभास स्त्री को लेकर है वह कामायनी में दिखायी देता है +

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो.
विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में।'

Scanned with CamScanner